जैन स्तवन

स्तवनकार : उदय शाह

उदय शाह

115/A, धर्मिन नगर,

कबीलपोर,

नवसारी - 396424 (गुजरात)।
(M) +91-9428882632

Website
https://sites.google.com/site/udayshahghazal/

Youtube Link
https://www.youtube.com/user/udaysshah10/videos

: स्तवन :

(स्तवनकार : उदय शाह)

फूल खिला दो तुम गुलशन में;
प्यार जगा दो सब के मन में।

तेरी रहमत से हे त्राता;
गुल खिल जाएं उजड़े बन में।

औरों के ऐब को गिनने से पहले;
ख़ुद को देखुं मन दरपन में।

हर पल तेरा स्मरण करूं मैं;
लीन रहुं मैं तेरे स्तवन में।

: स्तवन :

(स्तवनकार : उदय शाह)

दीन दुखी का तू है सहारा;
तूने सब को पार लगाया।

चांद भी तू सूरज भी तू है;
तू ही सांज है तू ही सवेरा।

मेरा यहां पे कुछ भी नहीं है;
दिया हुआ है सबकुछ तेरा।

सब कुछ रह जाएगा यहां पे;
नाम तेरा ही साथ आएगा।

सो ही रहा था मैं ग़फ़लत में;
नींद से मुझको तूने जगाया।

एक ही आरज़ू दिल में मेरे;
पाऊं इक बार दरसन तेरा।

: स्तवन :

(स्तवनकार : उदय शाह)

जबसे जिनशासन है मिला;
तबसे दिल का फूल खिला।

दुश्मन से भी प्यार किया;
नाहीं कोई शिकवा गिला।

कोई पत्थर फेंके तो;
उसको दें हम गुल का सिला।

प्रभुको ढूंढा कहां-कहां;
आख़िर सब के दिल में मिला।

: स्तवन :

(स्तवनकार : उदय शाह)

खोया-खोया रहता हूं; जिनेश्वर को भजता हूं;
मस्त-मगन मैं रहता हूं; जिनेश्वर को भजता हूं।

दुनिया से हो करके दूर; भक्ति की मस्ती में चूर;
उसकी राह पे चलता हूं; जिनेश्वर को भजता हूं।

दिन में मुझको चैन कहां; रातों में भी नींद कहां;
जागा-जागा रहता हूं; जिनेश्वर को भजता हूं।

देखा मैंने यहां-वहां; उसको अब मैं ढूंढूं कहां;
गली-गली में फिरता हूं; जिनेश्वर को भजता हूं।

: स्तवन :

(स्तवनकार : उदय शाह)

आया हूं तेरे दर पे दादा;
दिल में करुणा भर दे दादा ।

काम क्रोध लालच का दरिंदा;
मेरे मन से हर दे दादा।

नफ़रत मेरे दिल से मिटा कर;
दिल को प्यार से भर दे दादा।

दुख से भरा है जीवन मेरा;
ख़ुशियां थोड़ी भर दे दादा।

बीच भंवर में भटक रहा हूं;
नाव को पार तू कर दे दादा।

: स्तवन :

(स्तवनकार : उदय शाह)

दादा तेरा बड़ा है नाम;
मेरा भी तू कर दे काम।

बच निकले हैं तूफ़ां से;
ले करके हम तेरा नाम।

दादा मेरे तन-मन में;
गूंजे सदा ही तेरा नाम।

दादा तेरी भक्ति में ही;
मगन रहूं मैं सुब्ह-ओ-शाम।

: स्तवन :

(स्तवनकार : उदय शाह)

जिनशासन से नाता जोड़ा;
झूटे जग से रिश्ता तोड़ा।

पापों के अंधियारे पथ से;
तूने मेरा जीवन मोड़ा।

दुख की तो फ़रियाद नहीं है;
लेकिन भर दो सुख भी थोड़ा।

प्रेम-धर्म का पंथ बता कर;
तूने सब के दिल को जोड़ा।

: स्तवन :

(स्तवनकार : उदय शाह)

जीरावला पारसनाथ दादा;
मुझको है बस तेरी आशा।

चैन कहीं मिलता ही नहीं है;
दर-दर भटका हूं मैं प्यासा।

अपने कर्मों पर शरमा कर;
थक कर तेरे दर पे आया।

चाहा जो भी कुछ जीवन में;
आ कर तेरे दर पे पाया।

: स्तवन :

(स्तवनकार : उदय शाह)

दादा तेरी मूरत पर मैं वारी-वारी जाऊं;
तेरी किरपा रहे हमेशा तेरा ही गुण गाऊं।

ध्यान में तेरे दुनिया भूलूं ख़ुद को भी भुल जाऊं;
इस सृष्टि के कण-कण में बस तेरा दरसन पाऊं।

दूर करे मेरे सारे दुख बिगड़े काम बनाएं;
तेरी रहमत को दादा मैं दिल से भूल न पाऊं।

सुख और दुख दोनों को दादा कर्मों का फल समझूं;
सत्य-अहिंसा को अपना कर दुख में हिम्मत पाऊं।

जो भी चाहे जैसे चाहे शत्रुंजय वो आएं;
अपने घर से शत्रुंजय तक पैदल चलके आऊं।

: स्तवन :

(स्तवनकार : उदय शाह)

आदिनाथ आदिनाथ जय आदिनाथ;
प्यार से बोलो जय आदिनाथ।

जीवदया का कर्म महान;
कहते सब को जय आदिनाथ।

सत्य-अहिंसा का पैग़ाम;
देते सब को जय आदिनाथ।

सब के दिल में है भगवान;
दिल में ही ढूंढो जय आदिनाथ।

कोई कर दे जो अपमान;
प्यार से कह दो जय आदिनाथ।

: स्तवन :

(स्तवनकार : उदय शाह)

आदिनाथ आदिनाथ जय आदिनाथ।

जीवन नैया बीच तूफ़ान;
पार लगाओ हे आदिनाथ।

हम सब हैं तेरी संतान;
चरनों में रख लो हे आदिनाथ।

सुख हो या दुख धर लो ध्यान;
जय बोलो जय-जय आदिनाथ।